# ‘स्वरचित’ - काव्य स्पर्धा

---

- कवितेचे शीर्षक : - सृष्टी का संगित
- कवी / कवयित्रीचे नाव :- डॉ. किर्ती लोखंडे

---

चिड़िया चहकी चिरा अंधेरा
बुलबुल बोले गाएँ पपिहरा
कोयल की कूक टिंटिं तोता
सुप्त सृष्टी जागी हुआ सबेरा

आकर्षण की गुरूत्व में
घूमें सूरज पृथ्वी तारे
एक लय में एक ताल में
कालमापक गतीधारे

ओंकार ध्वनी सूरज का
गंभीर अंतराल में घूमे
स्वयूंभू अनादी अनंत
त्रिकालजयी गीत गूँजे

बूँदों की झमाझम रिमझिम
बारीश में मेघों का गर्जन
भीगते बच्चों की किलकारी
प्यासी धरती वर्षा नर्तन

पेड़ के पत्तों पर डाली पर
हवा छेडे राग सननसन
झरनों की मधुर कलकल
नाचे जल झूमे तनमन

Arhanat Music Therapy

# ‘स्वरचित’ - काव्य स्पर्धा

हृदय गाएँ अस्तित्व का गीत
जीवनी शक्ती धडधड धडकन
आती जाती साँस गाए निरंतर
इच्छाओं का जटिल स्पंदन

बरस रहा है चहूओर
सृष्टी का मधुर संगित
अंतर भी गाएँ धूनपर
खुशी से जीवनगीत

Anahat Music Therapy

# 'स्वरचित' - काव्य स्पर्धा

संगिताची जादू

रागमोहिनी वर्षा होई झरझर झरती स्वरबिंदू
दुनिया डोले तनमन डोले जागे संगिताची जादू ||धृ||

दिशादिशांत भरून वाहे इंद्रधनुषी सप्तसूर झंकार
श्री गणेशाचे नर्तन उघडे स्वर्गिय संगिताचे आगार
विणा वाजे गंधर्व गान गाजे श्री सरस्वतीला वंदू ||१||

स्वयंभू अनाहत नाद घूमे आमूलाधार सहस्रार
आहत नाद रिझवी कर्णा लेऊन लयताल शृंगार
नसांनसांत चैतन्य वाहे हर्षोत्साही मस्तिष्क मेंदू ||२||

संगितवर्षेत सुस्नात तनमन स्वर्गध्वनी सूरधार
रोगरहित तेजाळ जीवन उघडू सप्तसुखाचे द्वार
सुखदु:खाच्या पल्याड शब्देविण स्वानंदे संवादू ||३||

Anahat Music Therapy

‘स्वरचित’ - काव्य स्पर्धा

स्वरचित

शब्देविण दैवीस्पर्शे छेडिता अलगद मनतारा
संगित प्रकटले निनाद घुमले बरसे स्वरधारा ||धृ||

प्रसन्न माता सरस्वती, पावन शिवाचे वरदान
सामवेदांमाजी प्रकटले अद्‌भुत संगित ज्ञान
अनाहत आहत नादध्वनी प्रसवती सप्तस्वरा ||१||

मंद्र मध्य तार सप्तके स्फुरले कोकीळकंठी गान
वाद्ये झंकृत कर्णे संतृप्त सुरेल नवरसपान
गुंफता स्वररचना लय ताल, राग येती आकारा ||२||

शक्तीशाली संगित तरंगे हरती रोग दु:ख ताण
निराश तनमनात फुंकती नवऊर्जा नवप्राण
निद्रादायी शांतीस्मृतीप्रदायी प्रेरक सुविचारा ||३||

Anahat Music Therapy